भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने विकसित भारत २०४७ को आकार देने में उच्च शिक्षा की भूमिका पर NMIMS के छात्रों एवं प्राध्यापकों को संबोधित किया

मुंबई, १२ **जुलाई,** २०२४**:** देश के अत्यंत प्रतिष्ठित, NMIMS विश्वविद्यालय ने अपने परिसर में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम की मेजबानी की, और इस अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने अपनी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति महोदय ने छात्रों एवं प्राध्यापकों को "भारत का सशक्तिकरण: २०४७ में विकसित भारत बनाने में उच्च शिक्षण संस्थानों (HEIs) की भूमिका" के बारे में अपने बहुमूल्य विचारों से अवगत कराया। NMIMS के मुंबई परिसर में स्थित मुकेश पटेल सभागार में १२ जुलाई को इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल, श्री रमेश बैस; राज्य सभा के माननीय सांसद, श्री प्रफुलभाई पटेल; SVKM के माननीय अध्यक्ष तथा SVKM के NMIMS के कुलाधिपति, श्री अमरीशभाई पटेल; NMIMS विश्वविद्यालय के माननीय उपकुलपति, डॉ. रमेश भट्ट, और NMIMS के प्रति-उपकुलपति, डॉ. शरद महस्कर ने भी इस अवसर पर अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज की।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री जगदीप धनखड़ ने "भारत का सशक्तिकरण: २०४७ में विकसित भारत बनाने में उच्च शिक्षण संस्थानों (HEIs) की भूमिका" पर अपना मुख्य संबोधन प्रस्तुत किया जो अत्यंत प्रेरणादायक था। अपने वक्तव्य में उन्होंने राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "२०४७ तक विकसित भारत को आकार देने में उच्च शिक्षा की परिवर्तनकारी भूमिका पर NMIMS विश्वविद्यालय के सम्मानित प्राध्यापकों एवं छात्रों को संबोधित करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है। हम देश की स्वतंत्रता की शताब्दी का उत्सव मना रहे हैं, और ऐसे माहौल में विकसित भारत का सपना हमें और ज्यादा जिम्मेदारी एवं संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उच्च शिक्षण संस्थान ही वह आधार हैं जो इस सपने को साकार कर सकते हैं, क्योंकि वे ज्ञान के साथ-साथ नवाचार, उद्यमशीलता और सामाजिक मूल्यों को भी विकसित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। विभिन्न विषयों के बीच तालमेल, उद्योग जगत का सहयोग और अनुसंधान एवं विकास पर विशेष ध्यान, आपकी शिक्षण विधियों का सबसे अहम हिस्सा होना चाहिए।" उन्होंने शिक्षकों से एक ऐसे पाठ्यक्रम को विकसित करने का आग्रह किया, जो छात्रों को रचनात्मकता और दृढ़ विश्वास के साथ आज के जमाने की चुनौतियों से निपटने के कौशल और मानसिकता से लैस करने में सक्षम हो।

श्री धनखड़ ने उन प्रमुख क्षेत्रों को भी उजागर किया, जहाँ उच्च शिक्षण संस्थान विकसित भारत में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसे प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा कि विकसित भारत की ओर हमारी यात्रा को तेज गति प्रदान करने में प्रौद्योगिकी एवं डिजिटल परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य सेवा एवं जीवन विज्ञान, कृषि एवं खाद्य सुरक्षा, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी, कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा उद्यमिता एवं नवाचार सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इसके अलावा, उन्होंने कहा, "हम धीरे-धीरे २०४७ की ओर आगे बढ़ रहे हैं, जिसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम विश्व स्तर की सर्वोत्तम प्रक्रियाओं को अपनाते हुए अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखें और उसे बढ़ावा दें। हमारे युवाओं में हमारी सभ्यता से जुड़ी परंपराओं के प्रति गर्व की भावना पैदा करने, और उन्हें वैश्विक नागरिक बनने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी आपकी है।"

NMIMS विश्वविद्यालय के माननीय उपकुलपति, डॉ. रमेश भट्ट ने कहा, "आज का दिन हमारे लिए बेहद खास है, क्योंकि आज हमारे परिसर में ऐसे सम्मानित राजनेता उपस्थित हैं, जिनका समर्पण हमें प्रगति और एकजुटता की ओर अग्रसर करता रहता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा और कौशल विकास को प्राथमिकता देकर एक विकसित एवं समृद्ध राष्ट्र की मजबूत नींव रखी है। ४० से अधिक वर्षों से अपनी विरासत को संजोने वाला NMIMS विश्वविद्यालय, युवाओं को भविष्य के अनुरूप शिक्षा प्रदान करके उन्हें सक्षम बनाने में सबसे आगे है। हम सब

साथ मिलकर भारत की विकास गाथा और समृद्ध एवं विकसित भारत निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आज हमें प्रेरित करने वाले अपने सभी सम्मानित अतिथियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।"

माननीय उपराष्ट्रपति, श्री धनखड़ ने आगे यह भी कहा, "विकसित भारत की अवधारणा महज एक लक्ष्य नहीं है, बल्कि एक पवित्र मिशन है जो देश के प्रत्येक नागरिक और संस्थान से अपना सर्वोत्तम योगदान देने का आह्वान करता है। उन्होंने इस बात को भी उजागर किया कि इस मिशन के लिए उच्च शिक्षण संस्थान बेहद महत्वपूर्ण हैं, जो ज्ञान प्रदान करके, कौशल विकसित करके और अपने द्वारा स्थापित मूल्यों के माध्यम से "कल के भारत के वास्तुकार" की भूमिका निभा रहे हैं।

छात्रों को 'जय अनुसंधान' की भावना को अपनाने की राह दिखाते हुए, उन्होंने कहा कि "हमारे माननीय प्रधानमंत्री इस बात पर बल देते हैं कि, हमें सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति नहीं बनना चाहिए, बल्कि नए विचारों और समाधानों को प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति बनने का प्रयास करना चाहिए। अनुसंधान में संलग्न हों, हैकथॉन में भाग लें, नवाचार प्रकोष्ठों में शामिल हों, और अपनी उद्यमशीलता की भावना को विकसित करें।"

सभी के लिए सुलभ, किफायती एवं स्थायी समाधान बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि, "विकसित भारत का निर्माण सिर्फ वातानुकूलित कार्यालयों में नहीं होगा। इसका निर्माण तो गाँवों में, शहरी झुग्गियों में, और हमारे देश के दूरदराज के इलाकों में होगा। अपने करियर में धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए जमीनी स्तर पर हमेशा नज़र बनाए रखें। अपने देशवासियों के सामने आने वाली वास्तविक चुनौतियों को समझें।"

NMIMS विश्वविद्यालय का परिचय:

NMIMS की स्थापना १९८१ में हुई थी जिसे आज विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्राप्त है, तथा उद्योग जगत के साथ इस संस्थान का जुड़ाव काफी मजबूत है। यह संस्थान अपने ८ परिसरों में विभिन्न विषयों में शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की पेशकश करता है, जिसमें १७ विशेष स्कूल, २६,००० से अधिक पूर्णकालिक छात्र, तथा ८५० से अधिक पूर्णकालिक प्राध्यापक शामिल हैं, जिनमें १० प्राध्यापक ऐसे हैं जिन्होंने डॉक्टरेट के बाद के शोधकर्ताओं के लिए प्रतिष्ठित फुलब्राइट एवं हम्बोल्ट अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त की है। देश में प्रबंधन संस्थानों की बढ़ती मांग को पूरा करने के उद्देश्य से श्री विले पार्ले केलावानी मंडल (SVKM) ने इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी। यह संस्थान सर्वांगीण शिक्षा के क्षेत्र में अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता और निरंतर अनुसंधान पर केंद्रित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। SVKM के NMIMS को MHRD द्वारा वर्गीकृत स्वायत्तता विनियमन २०१८ के अंतर्गत श्रेणी-I के विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया, साथ ही NMIMS के मुंबई परिसर को NAAC द्वारा श्रेणी A+ (३.५९ का CGPA) की मान्यता दी गई है।